२. कलाकार

– राजेंद्र यादव

बहुरूपियों के बारे में हम सब जानते हैं । इन लोगों का पेशा अब समाप्त होता जा रहा है, किसी समय रईसों और अमीरों का मनोरंजन करने वाले बहुरूपिये प्रायः हर नगर में पाए जाते थे । ये कभी धोबी का रूप लेकर आते थे, कभी डाकिए का । हू-ब-हू उसी तरह का व्यवहार करके ये प्रायः लोगों को भ्रम में डाल देते थे । इनकी इसी सफलता से धोखा खा जाने वाला रईस इन्हें इनाम देता था । उसी तरह के बहुरूपिये का एक रूप मैंने राजस्थानी लोककथाओं में सुना था और मुझे वह अभी भी अच्छी तरह याद है । लगता है कि हम सब के भीतर कहीं न कहीं उसी तरह का एक बहुरूपिया बैठा है ।

एक बार एक बहुरूपिये ने साधु का रूप बनाया – सिर पर जटाएँ, नंगे शरीर पर भस्म, माथे पर त्रिपुंड, कमर में लँगोटी । उसके रूप में कहीं कोई कसर नहीं थी और वह संसारत्यागी साधु ही लगता था । उसने नगर से बाहर बड़े-से पेड़ के नीचे अपनी झोंपड़ी तैयार की, बगीचा लगाया और बैठकर तपस्या करने लगा । धीरे-धीरे सारे नगर में यह समाचार फैलने लगा कि बाहर एक बहुत पहुँचे हुए महात्मा ने आकर डेरा लगाया है । लोग उसके दर्शनों को आने लगे और धीरे-धीरे चारों तरफ साधु का यश फैल गया । सारे दिन उसके यहाँ भीड़ लगी रहती थी । लोग कहते थे कि महात्मा जी के उपदेशों में जादू है और उनके आशीर्वाद से संसार के बड़े से बड़े कष्ट दूर हो जाते हैं । अपनी इस कीर्ति से साधु को कभी-कभी बड़ा आश्चर्य होता और मन-ही-मन वह अपनी सफलता पर मुसकराया करता ।

नगर के सबसे बड़े सेठ से जब किसी ने साधु का जिक्र किया, तो वह अविश्वास से हँस पड़ा । बोला, ''ऐसे ढोंगी जाने यहाँ कितने आते रहते हैं !'' और वह अपने कारोबार में लग गया । साधु का नाम चारों ओर फैलता जा रहा था । साधु भी कभी-कभी सोचता कि अब फिर बहुरूपिया जीवन में लौटने में क्या रखा है, क्यों न इसी जीवन में अपनी जिंदगी लगा दी जाए । फिर उसका मन धिक्कारने लगता कि वह जिंदगी भर साधु बना रहा, तो अपने असली पेशे के साथ बेईमानी करेगा । इसी सोच-विचार में उसके दिन निकलने लगे ।

एक बार सेठ की पत्नी बहुत बीमार हो गई । दुनिया भर के इलाज कराए गए, वैद्य-डॉक्टर बुलाए, लेकिन सेठानी की तबीयत ठीक ही नहीं हुई । उसे लगता था कि वह अब नहीं बचेगी । मित्रों और शुभचिंतकों ने सलाह दी कि एक बार उस साधु को दिखा देने में क्या हानि है । हारकर सेठ तैयार हो गया । साधु ने जब दूर से सेठ को आते देखा, तो बहुत प्रसन्न हो

परिचय

जन्म : १९२९, आगरा (उ.प्र.)
मृत्यू : २०१३ दिल्ली
परिचय : राजेंद्र यादव जी साठोत्तरी पीढ़ी के जाने-माने उपन्यासकार एवं साहित्यकार हैं ।
नई कहानी के नाम से हिंदी साहित्य में आपने नई विधा का सूत्रपात किया । उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद द्वारा १९३० में प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'हंस' का पुनर्प्रकाशन आपने प्रेमचंद की जयंती के दिन ३१ जुलाई १९८६ को प्रारंभ किया और अपने अंतिम समय तक पूरे २७ वर्ष तक जारी रखा ।
प्रमुख कृतियाँ : 'जहाँ लक्ष्मी कैद हैं', 'छोटे-छोटे ताजमहल', 'किनारे से किनारे तक' (कहानी संग्रह), 'सारा आकाश', 'शह और मात' तथा 'उखड़े हुए लोग (उपन्यास) आदि ।

गद्‍य संबंधी

'कलाकार' कहानी का नायक बहुरूपिया एक श्रेष्ठ कलाकार है । वह अंत तक अपनी कला के प्रति ईमानदार रहता है । ढोंगी साधु का वेश धारण करने पर बहुरूपिया अपने उस रूप और वेश से ऐसा प्रभावित हुआ कि उसका मन भी एक त्यागी और बैरागी संन्यासी के समान सोचने लगता है । इस कहानी से प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने व्यवसाय के प्रति ईमानदार होना चाहिए ।

गया । नगर का सबसे बड़ा करोड़पति उसके यहाँ आ रहा था । आगे-आगे सेठ और फिर डोली में बीमार सेठानी । उसने जाकर साधु के चरण पकड़ लिए - ''महाराज, जैसे भी हो सेठानी को जीवनदान दीजिए । यह मेरे घर की लक्ष्मी है । इसी के कारण यह करोड़ों की संपत्ति आई है । जिस दिन से इसने मेरे यहाँ पाँव रखा है, मैंने जिस काम में हाथ लगाया, उसमें लाभ ही हुआ है । अगर इसे कुछ हो गया तो मैं किसी काम का नहीं रहूँगा ।''

साधु ने गंभीर चेहरा बनाकर डोली का परदा उठाया । सेठानी बीमारी में बेहोश पड़ी थी । ''भगवान ने चाहा तो सेठानी सात दिन में ठीक हो जाएगी ।'' उसने धूनी की चुटकी भर राख उसके ऊपर डाल दी । फिर रोज आने को कहकर अपनी आँखें मूँदकर समाधि में लग गया ।

सेठानी रोज आने लगी । संयोग की बात, धीरे-धीरे उसकी तबियत भी सुधरने लगी । सात-आठ दिनों में उसकी बीमारी समाप्त होने लगी । सेठ को साधु पर घनघोर विश्वास हो गया और वह रोज उसके पास आने लगा । सेठानी ठीक हो गई, लेकिन सेठ रोज आता रहा ।

साधु उसे रोज उपदेश दिया करता, ''यह संसार माया है । धन का लोभ आदमी को आदमी नहीं रहने देता । जितना धन बढ़ता जाता है, लोभ भी उतना ही बढ़ता जाता है । सच्चा सुख धन का त्याग करने में है, इस माया-मोह से उठकर भगवान के चरणों में ध्यान लगाने में ही सच्चासुख है । सोना तो मिट्टी है और मिट्टी का मोह पालकर आज तक किसी ने शांति नहीं पाई ।'' धीरे-धीरे साधु के उपदेशों का प्रभाव सेठ पर पड़ने लगा ।

एक दिन साधु ने देखा कि घोड़ों-ऊँटों और बैलगाड़ियों का झुंड उसकी कुटी की तरफ चलता आ रहा है । मन में संदेह हुआ कि लोगों को उसकी असलियत का पता तो नहीं चल गया और ये सरकार के आदमी उसे पकड़ने चले आ रहे हैं । वह अभी यहीं सब सोच ही रहा था कि देखा, उस झुंड के आगे-आगे वही सेठ है । सेठ पास आया । उसने साधु को प्रणाम किया । गाड़ियों, घोड़ों, ऊँटों से, सोने-चाँदी के गहनों, मुहरों और जवाहरों से भरे कलसे उतारें गए । देखते-देखते कुटी के सामने ढेर लग गया । सेठ ने साधु के चरण पकड़कर कहा - ''महाराज, आपके उपदेशों से मुझे सच्चा ज्ञान प्राप्त हो गया है और इस संसार से मेरा मन फिर गया है । झूठ-कपट से मैंने जो धन कमाया है, वह सब मैं आपके चरणों में रख रहा हूँ । इसका जो भी आप चाहें, करें-गरीबों में बाँट दें या मंदिर बनवा दें । मुझे अपना शिष्य बना लें ।''

गंभीर होकर साधु ने उत्तर दिया - ''जिस धन को मैं तुझे त्यागने का उपदेश देता रहा हूँ, तू उसकी माया में मुझे क्यों फँसाता है ? जो तेरे लिए मिट्टी है, वह मेरे लिए मिट्टी तो और भी पहले है । मैं इसमें हाथ नहीं लगा सकता ।'' और सचमुच उसने धन नहीं लिया । समझा-बुझाकर सेठ को लौटा दिया । महात्मा की इस महानता से सेठ की आँखों में आँसू आ गए ।

श्रवणीय

सार्वजनिक अस्पताल में जाकर किसी मरीज से उसके अनुभव सुनिए और अपने शब्दों में सुनाइए ।

संभाषणीय

यू ट्यूब पर लोकसंगीत सुनिए और किसी कार्यक्रम में प्रस्तुत कीजिए ।

अगले दिन जब सेठ आया तो उसने देखा कि साधु का कहीं पता नहीं है । इधर-उधर खोजा, कहीं भी कोई नहीं था । इतने में ही किसी ने आकर उसके चरण पकड़ लिए - ''सेठ, मेरा इनाम दें ।''

''कैसा इनाम? तू कौन है ?'' सेठ ने आश्चर्य से उस व्यक्ति को देखकर पूछा ।

''कसूर माफ करना सेठ जी, मैं वही कलवाला महात्मा हूँ । मैं साधु-वाधु कुछ नहीं, आपका सेवक बहुरूपिया हूँ । जब आप जैसे चतुर आदमी को मैंने धोखा दे दिया, तो मुझे अपनी कला का बहुत बड़ा इनाम मिलना चाहिए ।'' अपराधी भाव से बहुरूपिया सिर झुकाए खड़ा था ।

सेठ आश्चर्य के मारे आसमान से गिरा । फिर सँभलकर बोला - ''इनाम तो मैं तुझे दूँगा । सचमुच तूने अपने काम में कमाल कर दिया । लेकिन एक बात बता, कल जब मैं अपनी सारी संपत्ति तेरे पास ले आया था, तो तूने उसे क्यों नहीं स्वीकार किया ? अगर तू उसे ले लेता, तो आज तू सेठ होता । तुझे इस तरह इनाम माँगने की जरूरत नहीं रहती ?''

बहुरूपिया नम्रता से बोला - ''सेठजी, यह बात मेरे मन में भी आई थी । इस समय सारी संपत्ति लेकर आज मैं कहीं का कहीं जा सकता था । फिर मेरे मन ने कहा कि यह गलत है । मैं संसारत्यागी महात्मा का रूप धारण किए हुए हूँ । अगर ऐसा काम करूँगा तो रूप में खोट आ जाएगी । रूप को सच्चा रखने के लिए यही उचित है कि मैं इस संपत्ति को त्याग दूँ । सो सच्चे महात्मा की तरह मैंने उसे त्याग दिया, तो लगा कि अब मेरा काम पूरा हो गया । अब आप जो इनाम मुझे देंगे, खुशी से ले लूँगा ।''

''और मेरी सेठानी की बीमारी ?'' सेठ ने पूछा ।

''उसमें भी मेरा कुछ नहीं है । वह तो आपका और सेठानी का विश्वास और संयोग था ।''

सेठ की समझ में सचमुच नहीं आ रहा था कि कैसा यह बहुरूपिया है, जो करोड़ों की संपत्ति छोड़कर दो-चार अशर्फियों के इनाम पर इतना प्रसन्न और संतुष्ट है ।

पठनीय

अपनी रुचि की कोई सामाजिक ई-बुक पढ़िए ।

लेखनीय

किसी सामाजिक परंपरा के बारे में घर के बुजुर्गों से जानकारी प्राप्त कीजिए । वह परंपरा उचित है या अनुचित, इसपर अपना मत शब्दांकित कीजिए ।

शब्द संसार

बहुरूपिया पुं.सं. (हिं.) = तरह-तरह के रूप धारण करने वाला

जिक्र पुं.सं.(अ.)= चर्चा

धिक्कारना क्रि.(हिं.)= झिड़कना

पेशा पुं.सं.(फा.) = उद्‌यम, व्यवसाय

शुभचिंतक पुं.सं.(सं.) = किसी कार्य/व्यक्ति के बारे में अच्छा सोचने वाला

धूनी स्त्री.सं.(हिं.)= साधुओं द्‌वारा बनाया गया अग्निकुंड

अशर्फी स्त्री.सं.(फा.) = मूल्यवान धातु के सिक्के ।

खोट स्त्री.सं(हिं.)= दोष, बुराई

कहावत

डेरा लगाना = निवास के लिए जम जाना

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

साधु के रूप में बहुरूपिया ऐसा था

(२) परिणाम लिखिए :

१. बीमार सेठानी पर धूनी की चुटकी भर राख का –

२. बहुरूपिये की वास्तविकता जानने के उपरांत सेठ जी की स्थिति –

(४) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

सेठ साधु के पास ये चीजें लेकर आया

(३) निम्नलिखित विधान सही करके लिखिए :

१. बहुरूपिये हू-बू-हू उसी तरह का व्यवहार करके प्रायः लोगों को भ्रम में नहीं डालते थे ।

२. एक बार सेठ जी बीमार हो गए ।

३. सेठानी कभी-कभी आने लगी ।

४. साधु ने झगड़ा करके सेठ को लौटा दिया ।

(५) निम्नलिखित वाक्यों को घटनाक्रम के अनुसार लिखिए :

१. सेठ जी द्‌वारा सेठानी को साधु के पास ले जाना ।

२. बहुरूपिये का साधु का रूप लेना ।

३. सेठानी का बीमार होना ।

४. धीरे-धीरे सेठानी की तबियत सुधरना ।

(६) इन कृदंत शब्दों की मूल क्रियाएँ लिखिए :

१. झुकाव = ☐
२. सोच = ☐
३. बनावट = ☐
४. लगाव = ☐

(७) 'कला के प्रति ईमानदारी ही सच्चे कलाकार की पहचान है ।' इस सुवचन पर अपने विचार लिखिए ।

अभिव्यक्ति

'सहयोग से कठिन कार्य की पूर्ति होती है' विषय पर अपने विचार शब्दांकित कीजिए ।

भाषा बिंदु

पाठ में प्रयुक्त तीन-तीन क्रियाविशेषण अव्यय और संबंधसूचक अव्यय ढूँढ़कर उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

................, ..., ...
................, ..., ...
................, ..., ...

उपयोजित लेखन

आपके विद्‌यालय की सैर का वर्णन करने वाला पत्र अपनी सहेली/अपने मित्र को लिखिए : (पत्र निम्न प्रारूप में हो ।)

दिनांक : ....
संबोधन : ....,
अभिवादन : ....
विषय विवेचन : ------------------------------------

तुम्हारा/तुम्हारी :
....
नाम : ....
पता : ....
ई-मेल आईडी : ....

CJ28YA